1937 On Being in Hurry

Jald-baji (Manuscript, Published in Jain Gazatte). Also notes for On Being Over-proud

जैन गजट में प्रकाशित

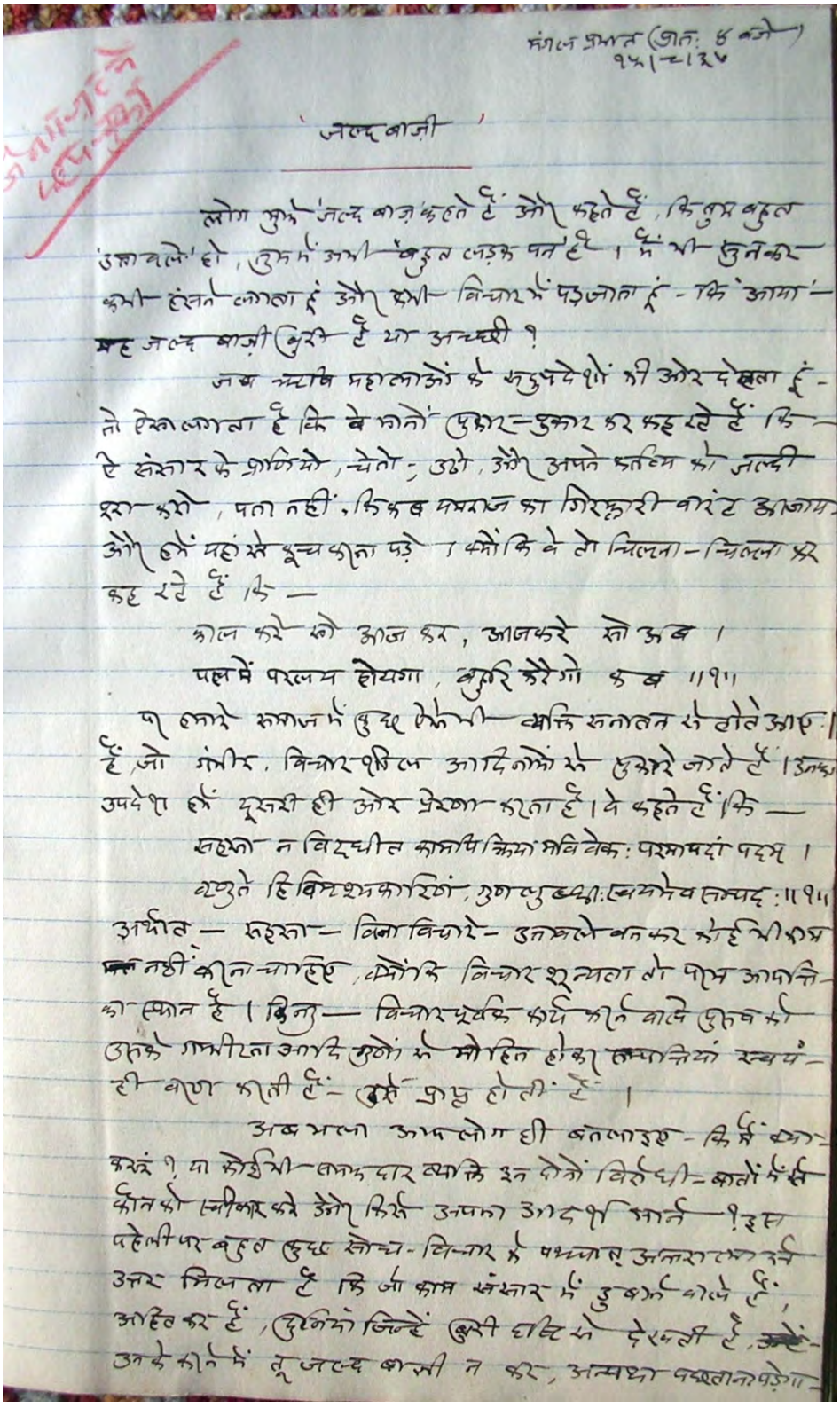

मंगल प्रभात (प्रात: ४ बजे)
१५।८।३७

'जल्दबाज़ी'

लोग मुझे जल्दबाज़ कहते हैं और कहते हैं, कि तुम बहुत 'उतावले' हो, तुममें अभी बहुत लड़कपन है। मैं भी सुनकर कभी हंसने लगता हूं और कभी विचार में पड़जाता हूं - कि 'आया' - यह जल्दबाज़ी बुरी है या अच्छी?

जब त्यागि महात्माओं के सदुपदेशों की ओर देखता हूं - तो ऐसा लगता है कि वे मानों पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि - ऐ संसार के प्राणियो, चेतो, उठो, और अपने कर्तव्य को जल्दी पूरा करो, पता नहीं, कि कब यमराज का गिरफ़्तारी वारंट आजाय - और तुम्हें यहां से कूच करना पड़े। क्योंकि वे तो चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि -

काल करे सो आज कर, आजकरे सो अब।
पल में परलय होयगा, बहुरि करैगो कब ॥१॥

पर हमारे समाज में कुछ ऐसे भी व्यक्ति सनातन से होते आए हैं, जो गंभीर, विचारशील आदि नामों से पुकारे जाते हैं। उनका उपदेश हमें दूसरी ही ओर प्रेरणा करता है। वे कहते हैं कि -

सहसा न विदधीत क्रियामविवेक: परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं, गुणलुब्धा: स्वयमेव सम्पद: ॥१॥

अर्थात - सहसा - बिना विचारे - उतावले बनकर कोई भी काम नहीं करना चाहिए, क्योंकि विचार शून्यता तो परम आपत्ति का स्थान है। किन्तु - विचारपूर्वक कार्य करने वाले पुरुष को उसके गम्भीरता आदि गुणों से मोहित होकर सम्पत्तियां स्वयं ही वरण करती हैं - उसे प्राप्त होती हैं।

अब भला आप लोग ही बतलाइए - कि मैं क्या करूं? या कोई भी समझदार व्यक्ति इन दोनों विरोधी-बातों में से कौन को स्वीकार करे और किसे अपना आदर्श माने? इस पहेली पर बहुत कुछ सोच-विचार के पश्चात् अन्तरात्मा से यही उत्तर मिलता है कि जो काम संसार में दुःख देने वाले हैं, अहित कर हैं, दुनियां जिन्हें बुरी दृष्टि से देखती है, उनके करने में तू जल्दबाज़ी न कर, अन्यथा पछताना पड़ेगा -

क्योंकि : बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हंसाय ॥१॥

पर — जो कार्य आत्मोन्नति के साधक हैं — सहायक हैं, जो कार्य किसी अवसर विशेष पर ही सम्पन्न हो सकते हैं और उसे चूक जाने पर हज़ारों प्रयत्न करने पर भी — जो सिद्ध नहीं किये जा सकते हैं, उन्हें तो बिना आगा-पीछा सोचे — तुरंत ही कर डालना चाहिए। क्योंकि यह अवसर - की प्राप्ति या काल-लब्धि हमेशा नसीब नहीं होती है। महापुरुष जितने भी होते हैं, वे सब उपयुक्त अवसर पाते ही काम-करने में ढील नहीं किया करते हैं। यदि उक्त अवसर पर जरा भी आगा-पीछा किया जायगा, तो गया-वक़्त फिर हाथ आने वाला नहीं है। फिर तो हाथ मलते ही रह जाना पड़ेगा — और याद आयेगा कि —

'अब पछताये होत क्या, चिड़ियां चुग गई खेत'।

इस उपर्युक्त विवेचन के पश्चात् जब मैं अपने आप का निरीक्षण करता हूं, तो देखता हूं — कि तूने जितने भी काम किये हैं, सब ठीक अवसर पर ही किए हैं और तू अवसर की परख भी रखता जानता है। यदि यह गुण तुझ में न होता, तो इस छोटी सी अवस्था में तूने जो इतने काम कर डाले हैं — वे कदापि पूरे नहीं कर सकता था — आज प्रत्यक्ष में देखते हैं, कि लोग एक ही नौकरी को रात-दिन करके भली भांति सम्पादन कर पाते हैं, पर तूने तो अपने जीवन के एक-एक क्षण की कीमत समझी है और दो-दो और कभी तीन-तीन संस्थाओं का कार्यभार एक साथ संभाला है, नये-नये ग्रन्थों का आये दिन स्वाध्याय किया है, अनुवाद किया है और यहां तक कि अपने स्त्री या पुत्र तक की बीमारी में रात-रात भर जागते रहने के समय कितने ही लेख लिखे हैं, कवितायें बनाई हैं और गहन-ग्रन्थों के अनुवाद तक किए हैं। यदि तुझ में इतनी जल्द बाज़ी न होती, तो भला इतने काम कब पूरे हो सकते थे और क्या जीवन में यह आशा भी जा सकती है कि आगे चल कर के यह काम कर लेंगे। अरे, उन लोगों की क्या दशा होती है — जो कहा करते हैं कि कल करेंगे — परसों करेंगे — अब कर लेंगे — क्या जल्दी पड़ी है। ऐसे लोगों की अन्तिम समय क्या दशा होती है, यह या तो भुक्तभोगी ही जान सकते हैं या प्रत्यक्ष दर्शी ही।

ऐसे — 'करेंगे — करेंगे', करने वालों के मुख से अन्त में हाय सांस के साथ — निकला करता है कि —

करिष्यामि, करिष्यामि, करिष्यामीति चिन्तया।
मरिष्यामि, मरिष्यामि, मरिष्यामीति विस्मृतम्॥ १॥

अर्थात् — अब करूंगा, अब करूंगा — ऐसा चिन्तन करते-करते ही हाय, यह भूल गया कि मरना पड़ेगा और एक दिन यहां से नाता तोड़ना पड़ेगा।

किन्तु, जो लोग अपना कर्तव्य अविलम्ब और अविराम सम्पादन करते रहते हैं, वे जगत् में सदा ही निर्भय विचरा करते हैं, उन्हें स्वप्न में भी मौत का भय नहीं रहता, न किसी प्रकार का चित्त संताप। ऐसे लोगों को यदि अचानक ही संसार से प्रयाण करना पड़ता है, तो वे हंसते-हुए यह गीत गाते चले जाते हैं कि —

हम जग से नाता तोड़ चले,
हम जग से नाता तोड़ चले॥

१

हम नहीं किसी के ऋणियां हैं,
हम नहीं किसी के गुनियां हैं,
हम अपनी ड्यूटी बजा चले,
हम ~~जग से नाता तोड़~~ अपना कर्तव्य किया चले॥ हम जग से०॥

२

नहिं वैर भाव हम साथ लिया,
नहिं दीन वचन हमने कभी किया।
हम जग में जबसे बूझ चले,
हम हंसते अब कर कूच चले॥ हम जग से०॥

३

२ 'नर काम अधूरा' जाते हैं,
१ यह नहीं आज पछताते हैं।
हम जग की माया छोड़ चले,
हम सुख से मुंह को मोड़ चले॥ हम जग से०॥

———०———

मंगल प्रात ४।३० पर
२५।१०।३८

'क्या मैं अभिमानी हूँ ?'

१ 'छोटीलाल' नामसंस्कार,
२ गुरुओं के प्रमाण पत्र,
३ वेतन कटने के नाम से क्षोभ और स्वदेशी की नौकरी का त्याग।
४ व्यापार की नौकरी में अपमान पर आपत्ति और उससे मुकाबिला।
५ स्वदेश-उपदेशक की घटना (१९३१ के नमक सत्याग्रह की बात)
६ - विवाह के पूर्व लड़की के चुनाव वाली घटना (रायसेन की बात)
७ हाल ही की घटना (स्वाभिमान की रक्षार्थ सारी पूंजी को गंवाया करना।

उपसंहार और धर्मसिद्धान्त से उसका विश्लेषण

— ० —

मंगलप्रात ५ बजे
२५।१०।३८

वीर लेखक

१ - अक्टूबर १९३८ के विशाल भारत में के 'पारिश्रमिक' लेख और इससे पूर्व निकले 'हंस' के कहानी अंक के उद्धरण देना।
२ - स्व-सम्पादन विभाग प्रकाशन।
३ - पत्र सम्पादकों के पत्रों का निर्देश,
४. समाज को चेतावनी,
५ - विद्वानों का - अध्यापकों का कर्तव्य,

उपसंहार और पारिश्रमिक प्रदान का ढंग।

— ० —

'मेरा जीवन'

मेरा जीवन सचमुच में एक पहेली है, वह भी साधारण नहीं; रहस्य भरी !!! मुझे जिस समय अत्यधिक शक्ति और सहानुभूति की आवश्यकता थी, उस समय चारों ओर से अपमान, धिक्कार और न जाने क्या-क्या उपहार में मिला। मेरे जीवन के इस संकटपूर्ण महत्व के समय का कोई अनुमान कर सकता है, पर दैवोपहत लाचार सहना ही पड़ता है। अपने जिन नवीन पिता (श्वसुर) से मुझे कुछ सान्त्वना मिलने की आशा थी उनसे उल्टी अपमान ही मिली। उनका या किसी का क्या दोष। दोष तो मेरे पूर्वजन्म के संचित कर्मों का है, जिन से यह मौजूदा हालत नसीब है। फ़िलहाल सब भाग्य सहना।

२५।१०।३८
(रात के ११ बजे)